षष्टम् अध्याय

"महिला पुलिस कर्मियों के कार्य पालन में आने वाली बाधाओं/समस्याओं के समायोजन के आयाम"

हमारे देश में विगत वर्शो में जो सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक परिवर्तन तेजी से हो रहे हैं। उसी का परिणाम है महिलाओं का अधिकाधिक संख्या में कार्योजन में आना।

शिक्षित विवाहित स्त्रियों द्वारा नौकरी करने पर उनके परिवार पर प्रभाव या असर अवश्य पड़ेगा। क्योंकि महिलाओं को घर एवं बाहर दोनो जगहों पर पूरा सहयोग देना पड़ता है।

विवाहित महिला पुलिस कर्मियों की दोहरी भुमिका होती है। एक साथ वे कार्यकर्ता और गृहणी होती हैं। इन दोनों भुमिकाओं में संघर्श की भुमिका बनी रहती है। यदि गृहणी की भुमिका वह अच्छी तरह निभाती है, तो कार्यकर्ता की भुमिका धुमिल पड़ेगी। वह कार्योजन की भुमिका में अत्यधिक रूचि लें तो गृहणी की भुमिका की उपेक्षा होगी। इस प्रकार महिला पुलिस कर्मियों' के जीवन में अत्यन्त कोमल सन्तुलन की समस्या हैं। यदि परिवार के सदस्य उनकी दोनो भुमिकाओं को समर्थन प्रदान न करें तो वह परिवार और कार्य में भलिभॉति समायोजित नही हो सकती। अतः प्रस्तुत अध्याय में ऑकड़ों के आधार पर यह पता लगाने का प्रयास किया गया है कि 'महिला पुलिस कर्मी परिवार और कार्य के बीच किस प्रकार समायोजित हैं। कार्य व परिवार के समायोजन के स्वरूपों का विवरण निम्नलिखित आयामों पर किया गया है।

अः– महिला पुलिस कर्मियों का अपने पति के स्टेटस और सास–ससुर के

सम्बन्धों में सन्तोष।

बः– वैवाहिक जीवन में सन्तोश का असर।

सः– 'महिला पुलिस कर्मियों की घरेलू कार्यो के प्रति अभिरूचियॉ।

दः– 'महिला पुलिस कर्मियों के रागात्मक जीवन पर प्रभाव।

यः– पारिवारिक सामायोजन प्रमाप के आधार पर प्रभाव।

रः– पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्योजन में कठिनाई।

लः– कार्योजन की भुमिका के कारण पारिवारिक जीवन मे कठिनाई।

वः– ''महिला पुलिस कर्मी'' यदि अपनी किसी भुमिका को ठीक से निभाने में असमर्थ हो जाती हैं तो उसे कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

भाः– "महिला पुलिस कर्मी" जब रात की पारी में कार्य करती हैं तो उनके परिवार को किन–किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

महिला पुलिस कर्मियों को अपने पति के व्यवसाय से सन्तुश्टि–

"महिला पुलिस कर्मियों के पति की व्यवसाय से सन्तुश्टि के सम्बन्ध में जानकरी प्राप्त की गयी है, जिसमें अधिकतम प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी अपने पति के व्यवसाय से सन्तुश्ट हैं।

सारणी संख्या 6.1

'महिला पुलिस कर्मियो का पति के व्यवसाय से सन्तुश्टि'

पति के परिवार वाले से सम्बन्ध	आवृत्ति	प्रति□ ात
अत्यधिक सन्तुश्ट	44	14.66
सन्तुश्ट	130	43.33
असन्तुश्ट	30	10.00
अत्यधिक असन्तुश्ट	16	05.33
उत्तर नहीं	80	26.66

योग	**300**	**100.00**

आँकड़ो के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 14.66 प्रतिशत 'महिला पुलिस कर्मी अपने पति के व्यवसाय से अत्यधिक सन्तुश्ट हैं। 43.33 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी अपने पति के व्यवसाय से सन्तुश्ट हैं। 10 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी अपने पति के व्यवसाय से असन्तुश्ट हैं। केवल 5.33 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी ऐसी हैं जो अपने पति के व्यवसाय से अत्यधिक असन्तुश्ट हैं। इससे स्पश्ट होता है कि अधिकतम प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी सन्तुश्ट हैं। जिनके पति उच्च या बराबर पद पर कार्य कर रहे हैं। असन्तुश्ट महिला पुलिस कर्मी वे हैं, जिनके पति की आमदनी कम है।

महिला पुलिस कर्मियों का पति के परिवार वालों से सन्तुश्टि–

महिला पुलिस कर्मियो के कार्योजित होने के कारण उनके प्रति के परिवार वालों से सम्बन्ध का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

अधिकांश महिला पुलिस कर्मी अपने पति के परिवार वालों से अलग रहती हैं।

सारणी संख्या 6.2

'महिला पुलिस कर्मियो का पति के परिवार से सन्तुश्टि'

पति के परिवार वाले से सम्बन्ध	आवृत्ति	प्रति□ ात
अत्यधिक सन्तुश्ट	45	15.00
सन्तुश्ट	186	62.00
असन्तुश्ट	42	14.00

अत्यधिक असन्तुश्ट	27	09.00
योग	**300**	**100.00**

आँकड़ों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 15 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी अपने पति के परिवार वालो से अत्यधिक सन्तुश्ट हैं। 62 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी सन्तुश्ट हैं। 14 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी असन्तुश्ट हैं। केवल 9 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी अपने पति के परिवार वालों से अत्यधिक असन्तुश्ट हैं।

6.1 वैवाहिक इतिहास :–

श्रीमती "ख" का जन्म एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ। इनका पालन पोशण एक अच्छे पारिवारिक वातावरण में हुआ। इनकी माँ बचपन से ही बाहर नौकरी करती थी, इस कारण इनका लगाव अपने पिता से अधिक रहा। बचपन में शिक्षिकाओं के बूरे व्यवहार एवं पढ़ाई में ध्यान न देने के कारण यह विद्यालय में एक कमजोर विद्यार्थी गीनी जाती थी। यहाँ तक कि रि तेदार भी इनके पिता से कहते थे कि इन्हे हाईस्कूल के बाद नर्सिग ट्रेनिग या किसी छोट–मोटे काम में लगा दें। लेकिन इनकी माता जो शिक्षा विभाग में एक प्रवक्ता के पद पर थी इन्हे कठिन परिश्रम एवं जीवन में उच्च स्तर प्राप्त करने के लिये प्रोत्साहित करती रही। इस प्रकार इनके हृदय में आगे बढ़ने की इच्छा प्रबल होती गयी। समय के साथ ही श्रीमती "ख" ने एक वि वविद्यालय से एम.एस.सी की शिक्षा प्रथम श्रेणी में पास कर ली। इनकी शिक्षा में प्रगति के पीछे इनके परिवार वालों की मुख्य रूप से उनकी माता की प्रेरणा रही।

श्रीमती "ख" ने बताया कि जब वे एम.एस.सी परीक्षा दे रही थी उसी बीच इनके पिता का निधन हो गया। इनकी माता जो उस समय शिक्षा विभाग में एक अधिकारी के पद पर पहुँच चुकी थी उनके ऊपर परिवार की समस्त जिम्मेदारियाँ आ गई। उनके माता का स्थानान्तरण अन्यत्र हो गया, इस कारण बच्चों को और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

श्रीमती "ख" ने बताया कि बचपन से माता के बाहर नौकरी करने कारण इनके पिता ने बच्चों का पालन पोशण किया तथा उन्हे माँ तथा पिता दोनो का प्यार दिया। अपनी सम्पूर्ण शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् यह एक इंस्पेक्टर पद की प्रतियोगी परीक्षा पास करके प्रशिक्षण प्राप्त की तथा इंस्पेक्टर के पद पर तैनात कर दी गयी। इन्हीं दिनो इनकी माता इनके विवाह के लिये चिन्तित थी तथा एक योग्य 'वर' की तलाश में थी। सौभाग्य से कुछ वर्शो बाद एक योग्य 'वर' मिला जो शिक्षित तथा स्वछन्द विचारों वाला युवक था। वह एक कम्पनी में आफिसर की हैसियत से कार्य कर रहा था। इनकी माता जी ने इनका विवाह उस युवक से कर दिया। इस समय श्रीमती "ख" के पास एक पुत्र है। एक प्रश्न के उत्तर में इन्होने बताया कि पति के साथ इनके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर हैं। इनके पति इनका काफी ध्यान रखते हैं। तथा कभी किसी प्रकार का कश्ट नहीं होने देते हैं। इन्होंने बताया कि इनके सम्बन्ध इनके पति के परिवार वालों से अच्छे नहीं हैं। वे लोग दहेज के सम्बन्ध में इन्हें बहुत सारी बाते कहते हैं। इस कारण ये अपने ससुराल नहीं जाती हैं। ये अपने पति के साथ अलग रहती हैं। कार्य स्थल पर भी इनका अपने सहयोगियों के साथ अच्छे सम्बन्ध हैं। बताया कि आत्म निर्भर होने के कारण ही वे कार्योजन में

आयी।

6.2 वैयक्तिक इतिहासः–

श्रीमती 'य' का जन्म एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। इनकी आयु 50 वर्श है बी.ए. तक की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् ये महिला सिपाही पद की तैयारी करने लगी और सभी भार्तो को पुर्ण करने की बाद एक महिला पुलिस थाने में सिपाही पद पर कार्य करने लगी। इसी बीच एक मुस्लिम लड़का इनके सम्पर्क में आया। धीर–धीरे इनकी मित्रता उससे हो गयी और बाद में चल कर यह मित्रता प्रेम में परिवर्तित हो गयी। तथा इन दोनो ने विवाह कर लिया। इसी बीच इन्होने एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। इनके पति रेलवे में गार्ड हैं। तथा इनका वेतन 14,000 रू प्रतिमाह है। श्रीमती 'य' ने बताया कि इनके चार बच्चे हो गये थे इस कारण घर का खर्च चलाने में अत्यधिक कठिनाई होती थी, अतः उन्हे पदोन्नति के लिए काफी प्रयास करना पड़ा। इस समय ये एक महिला पुलिस थाने में 'दिवान' हैं। तथा इनका वेतन 20,000 रू प्रतिमाह है। पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के सम्बन्ध में एक प्रश्न पुछे जाने पर श्रीमती 'य' ने बताया कि ये अपने पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन में पूर्णतः सन्तुश्ट हैं। इनके पति तथा बच्चे घर के कार्यो में इनका हाँथ बंटाते हैं। अब इनके बच्चे बड़े हो चुके हैं। तथा कालेजों एवं वि ववविद्यालयो में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इनके पति भी एक भाांत स्वभाव के व्यक्ति हैं। जो इनका काफी ध्यान रखते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इनका सहयोग करने का प्रयत्न करते है। कार्य स्थल पर श्रीमती 'य' का सम्बन्ध तथा अन्य

सहयोगीयों के साथ अच्छे हैं। यह एक परिश्रमी महिला हैं। जो कि अपने कार्य को बड़े परिश्रम एवं लगन के साथ करती हैं। अपनी काफी थकान एवं कार्य बोझ अनुभव करती हैं। कूल मिला जुला कर श्रीमती 'य' अपने कार्योजन और पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन से सन्तुश्ट हैं।

6.3 वैयक्तिक इतिहासः—

श्रीमती 'ज' का जन्म एक उच्च मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ तथा इनकी आयु 38 वर्श है। तथा यह इस्पेक्टर पद पर कार्यरत हैं। इनकी भौक्षिक योग्यता बी.ए. है। अपनी शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् लगन एवं कठिन परिश्रम के कारण इंस्पेक्टर पद प्रात करने में सफल हो गयी। इनके माता पिता योगय 'वर' की तलाश में थे। कई वर्श बीत जाने के बाद उनके लिये कोई योगय वर नहीं मिला। अतः श्रीमती 'ज' निराश रहने लगी, इसी बीच इनकी माता का भी स्वर्गवास हो गया। पिता योग्य वर की तलाश में थे ही। सौभाग्यवश इनको एक अच्छा वर मिल गया। अतः इनका विवाह हो गया।

इस समय श्रीमती 'ज' के पास दो बच्चे हैं। इनके पति एक स्कूल मे लिपिक हैं। श्रीमती 'ज' अपने पति के साथ अपने पिता के घर पर ही रहती है। क्योंकि इनके पिता वृद्ध हैं। उन्हें देखने वाला कोई नहीं है। वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित एक प्रश्न के उत्तर में श्रीमती 'ज' ने कहा कि वह अपने वैवाहिक जीवन से सन्तुश्ट हैं। उन्होंने ने बताया कि कार्योजन के कारण वह अपने बच्चों पर ध्यान नही दे पाती हैं। उन्होने इस बात पर बल दिया कि वि वास पात्र नौकरानी न मिलने से उन्हे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इनके पति घर के कार्यो में इनकी पूरी सहायता करते है। कार्य स्थल पर इनके सम्बन्ध अपने सहयोगियों से

सामान्य है।

6.4 वैयक्तिक इतिहासः—

श्रीमती 'द' एक महिला पुलिस इंस्पेक्टर हैं। यह एम.ए. हैं। इनके पति एक अच्छे सामाचार पत्र में सम्पादक के पद पर कार्य करते हैं। इनके पास दो बच्चे हैं। यह एक उच्च मध्यम वर्गीय परिवार की हैं इनके पिता भारतीय सेना में 'मेजर' के पद पर थे। अब अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। प्रारम्भ में इनकी शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से हुयी। बचपन में श्रीमती 'द' मेधावी छात्रा रही हैं। इनके पिता ने इन्हे शिक्षा प्राप्त करने तथा अपने पसन्द का व्यवसाय चुनने की पूर्ण स्वतन्त्रता व सुविघा दे रखी थी। एम.ए. करने के उपरान्त ये महिला पुलिस इंस्पेक्टर पद की तैयारी करने लगी और अपनी लगन व परिश्रम से इस पद को प्राप्त करने में सफल भी हुयी।

श्रीमती 'द' सुन्दर तथा गम्भीर प्रवृति की महिला है। जो अपने व्यवहार से एक आदर्श पत्नी गृहणी लगती हैं। ये अपने भारतीय पहनावें तथा इनका व्यक्तित्व बड़ा आकर्शक है श्रीमती 'द' ने नौकरी मे आने के एक वर्श बाद विवाह किया इनके पति एक स्वछन्द विचार वाले व्यक्ति हैं। ये अपनी पत्नी को भौक्षिक योग्यता बढ़ाने तथा व्यवसाय में आगे बढ़ाने के लिए सदा प्रोत्साहित करते रहे।

श्रीमती 'द' ने बताया कि उनके पति एक अच्छे साथी हैं। वे उनकी घरेलू कार्यो में सहायता करते हैं। तथा किसी बात की शिकायत नहीं करते हैं। पारिवारिक कार्यो में काफी रूचि लेते हैं। वे इन्हें घर तथा बाहर

दोनों जगह मन लगाकर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वे इस विचार धारा के व्यक्ति हैं कि महिलाओं को केवल आर्थिक लाभ के लिए ही नहीं अपितु बौद्धिक क्षमता एवं गुणों के प्रदर्शन हेतु भी कार्य करने को महता देते हैं।

इन्होने प्रश्न के उत्तर में बताया कि कार्योजन के अलावा भी अपने बच्चों को अधिक से अधिक समय देने का प्रयास करती है। बच्चों की स्वयं पढ़ाती है। तथा स्कूल का गृह कार्य भी पूरा करवाती हैं। इनका एकाकी परिवार है। इनके पति व्यस्त रहते हैं। और अधिकांशतः वह घर से बाहर रहते हैं। इस कारण घर की पूरी व्सवस्था का भार इन्ही पर रहता है। इन्होने यह भी बताया कि कार्योजन तथा घरेलू जिम्मेदारियों के कारण कभी–कभी कार्य बोझ का अनुभव करती है। तथा अपनी इच्छानुसार पैसा खर्च करती है। इन्हें इस सम्बन्ध में पति से अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। श्रीमती 'द' घर और कार्योजन दोनो भुमिकाओं से बहुत सन्तुश्ट है। ये अपना अध्यापन कार्य परिश्रम से करती हैं। तथा वैवाहिक और पारिवारिक जीवन को भी प्राथमिकता देती हैं।

6.5 वैयक्तिक इतिहासः–

श्रीमती 'इ' का जन्म एक उच्च मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ। इनकी आयु 40 वर्श है। यह महिला पुलिस थाने में एक महिला सिपाही है। इन्होने बताया कि इनकी माँ सौतेली थी, इस कारण यह माँ के प्यार से वंचित रही, इण्टरमीडिएट पास करने के प्श्चात् उन्होने महिला सिपाही पद हेतु आवेदन किया और कठिन परिश्रम से इस पद को प्राप्त करने में

सफल हुयी।

इस प्रश्न के उत्तर में इन्होने यह भी बताया कि पारिवारिक समस्याओं के कारण इच्छा होते हुये भी वह उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त कर सकी। उन्होने यह भी बताया कि एक क्रिशिचियन लड़का उनके घर पर आया जाया करता था उसके प्रति उनका विशेश आकर्शण था। दोनो में मित्रता बढ़ी और अन्त मे दोनो ने विवाह करने का निश्चय किया। श्रीमती 'इ' के माता–पिता ने पुत्री की रूचि देखते हुये उसका विवाह उसी नवयुवक से करा दिया। इस समय इनके पास तीन बच्चे हैं। उनके पति टिकट कलेक्टर के पद पर हैं। उन्होने बताया विवाह के पश्चात् उन्हें अपने पति के साथ संयुक्त परिवार में रहना पड़ा तथा उन्हे अनेक कठिनाइयों को झेलना पड़ा। उन्हे घर का पूरा काम करना पड़ता था। वह अपनी इच्छा से कही बाहर नहीं जा सकती थी।

तीन–चार वर्शो तक यही क्रम चलता रहा। लाचार होकर श्रीमती 'इ' ने अपने पति से कहा कि वह कही बाहर मकान लेकर रहे। पति ने समझाया कि वह किसी प्रकार का समायोजन स्थापित करें। लेकिन प्रतिदिन एक न एक समस्याऐं उत्पन्न होती गयी। अन्त में दोनो ने अलग–अलग निश्चय किया और किराये के मकान में अलग–अलग रहने लगे।

इस समय श्रीमती 'इ' अपने पति तथा बच्चों के साथ रहती है। उन्होने बताया कि वह अपने वैवाहिक जीवन से पूर्णतः सन्तुश्ट हैं । कार्य

स्थल पर इनके सम्बन्ध अपने सहयोगियों से काफी अच्छे हैं।

6.6 वैयक्तिक इतिहासः–

श्रीमती 'घ' का जन्म एक मध्यम वर्गीय परिवार में हआ। इनकी आयु 30 वर्श है, यह एक महिला पुलिस थाने में 'होमगार्ड/चौकीदार' हैं। इनके पति बच्चों के स्कूल के वार्डेन है। इनका वेतन 8000 रु प्रतिमाह है। यह परिवार की स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए कार्योजन में आई। इन्होने माता–पिता के द्वारा संयोजित विवाह किया। विवाह के पश्चात् इन्होने नौकरी नहीं छोड़ी क्योंकि इनके पति की आयु बहुत कम थी। इनके पति को प्रतिमाह 8000 रु0 प्रतिमाह वेतन मिलते हैं। इस कारण इनका कार्योजन में रहना अति आव यक था। श्रीमती 'घ' के पास इस समय दो बच्चे हैं।

वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित एक प्रश्न के उत्तर में श्रीमती 'घ' ने बताया कि वह अपने वैवाहिक जीवन से पूर्णतः सन्तुश्ट हैं। इन्होने यह भी बताया कि उनके पति बड़े दयालू तथा उदार प्रवृति के व्यक्ति हैं। वह घर के कामों में उनकी पूरी सहायता करते हैं। जब वह कार्योजन में जाती हैं। उस समय उनके पति बच्चों की देख भाल करते हैं इनका एकाकी परिवार है। अतः श्रीमती 'घ' की अनुपस्थिति में बच्चों की देख रेख करना पति के लिए अनिवार्य हो जाता है। उन्होने बताया कि जब उनकी रात की ड्युटी होती है, उस समय पति को काफी कठिनाई होती है। वह बच्चों को छोड़कर कही बाहर नहीं जा सकते। कार्य स्थल पर इनके अपने सहयोगियों से सम्बन्ध बड़े अच्छे हैं। उन्होने बताया कि यदि उनके पति उनका इतना यहयोग न करें तो उस दशा में कार्योजन छोड़ना पड़ सकता

है। कुल मिलाकर ये अपने वैवाहिक जीवन से पूर्णतः सन्तुश्ट हैं।

6.6 वैयक्तिक इतिहासः–

श्रीमती 'म' का जन्म एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण ये उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकी। हा0 स्कूल पास करने के उपरान्त इन्होने 'होमगार्ड' की ट्रेनिंग कर ली और कार्य करने लगी। इन्ही दिनो एक मुस्लिम नवयुवक इनके सम्पर्क में आया और वह एक नर्सरी स्कूल में अध्यापक था। उन्होने उस नवयुवक से प्रेम विवाह कर लिया। इस समय श्रीमती 'म' के पास दो बच्चे हैं। इन्होने बताया कि विवाह के पश्चात् आर्थिक कठिनाइयों के कारण इनको नौकरी करना पड़ा क्योकि इनके पति की आय बहुत कम थी। आर्थिक कठिनाइयों के कारण ही इनके पति को कई टयुशन करने पड़ते हैं।

वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित एक प्रश्न पूछने पर इन्होने बताया कि यह अपने वैवाहिक जीवन से पूर्णतः सन्तुश्ट हैं। इने पति का अच्छा स्वभाव है। कार्य में अत्यधिक व्यस्त होते हुये भी यह अपनी पत्नी को घर के कामों में सहयोग देते हैं। साथ ही साथ अपने बच्चों को पढ़ाते भी हैं।

महिला पुलिस कर्मीयों का सम्पूर्ण वैवाहिक जीवन में सन्तुश्टि

महिला पुलिसकर्मियो के सम्पुर्ण वैवाहिक जीवन से सन्तुश्टि के सम्बन्ध में प्राप्त तथ्यों से स्पश्ट होता है कि अधिकांश महिला पुलिस कर्मी

अपने सम्पुर्ण वैवाहिक जीवन में सन्तुश्ट हैं।

सारणी संख्या 6.3

महिला पुलिस कर्मियों का सम्पुर्ण वैवाहिक जीवन में सन्तुश्टि

वैवाहिक जीवन से सन्तुश्टि	आवृत्ति	प्रति□ ात
अत्यधिक सन्तुश्ट	25	08.33
सन्तुश्ट	91	30.33
असन्तुश्ट	19	06.33
अत्यधिक असन्तुश्ट	15	05.00
विधवा	70	23.33
अविवाहित	80	26.66
योग	**300**	**100.00**

आंकड़ो के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 08.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी अपने सम्पूर्ण वैवाहिक जीवन से अत्यधिक सन्तुश्ट हैं। 30.33 प्रतिशत महिला पुलिस सन्तुश्ट हैं। 06.33 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी अपने वैवाहिक जीवन से असन्तुश्ट है। 15.00 प्रतिशत महिला पुलिस अत्यधिक असन्तुश्ट है। 23.33 प्रतिशत महिला पुलिस विधवा है तथा 26. 66 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी अविवाहित हैं।

महिला पुलिस कर्मियों की घरेलू कार्यो को करने की अभिरूचि

वर्तमान अध्ययन में महिला पुलिस कर्मियों की घरेलू कार्यो को करने की अभिरुचि जानी गयी है। अधिकांश महिला पुलिस कर्मी प्रतिदिन खाना बनाती हैं। कुछ बच्चों को पढ़ाती है। कुछ कपड़े धोती तथा बर्तन भी साफ

करती हैं। अधिकांश महिला पुलिस कर्मी कभी–कभी भाापिंग भी करती हैं।

सारणी संख्या 6.4

महिला पुलिस कर्मियों की घरेलू कार्यो को करने की अभिरूचि

घरेलू कार्यों को करने की अभिरूचि	प्रतिदिन		सप्ताह में एक बार		कभी–कभी		कभी नहीं		योग
	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	आवृति	
खाना बनाना	66.00	198	14.00	42	17.00	51	3.00	09	300
कपड़े धोना	62.00	186	18.00	54	14.00	42	6.00	18	300
बर्तन साफ करना	17.00	51	–	–	61.00	183	22.00	66	300
बच्चों को पढ़ाना	15.00	45	15.00	45	41.00	123	29.00	87	300
भाापिंग करना	16.00	48	14.00	42	70.00	210	–	–	300

उपरोक्त तथ्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 66.00 प्रतिशत महिला पुलिस प्रतिदिन खाना बनाती है। 14.00 प्रतिशत सप्ताह में एक बार बनाती हैं। 17.00 प्रति ात महिला पुलिस कभी–कभी बनाती हैं। तथा 03 प्रतिशत ऐसी महिला पुलिस कर्मी हैं जो कभी खाना नहीं बनाती हैं। 62.00 प्रतिशत महिला पुलिस प्रतिदिन कपड़ा धोने का कार्य करती हैं। 18. 00 प्रतिशत महिला पुलिस सप्ताह में एक बार 14.00 प्रतिशत महिला पुलिस कभी–कभी एवं 06 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी कपड़ा धोने का कार्य कभी नहीं करती हैं। 17.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी प्रतिदिन बर्तन साफ करती हैं। 61.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी कभी–कभी बर्तन साफ करती हैं। 22.00 प्रतिशत महिला पुलिस बर्तन कभी नहीं साफ करती

हैं। 15.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी प्रतिदिन बच्चों को पढ़ाती है, 15. 00 प्रतिशत महिला पुलिस ऐसी हैं जो सप्ताह में एक बार बच्चों को पढ़ाती हैं 41.00 प्रतिशत महिला पुलिस कभी–कभी बच्चों को पढ़ाती हैं। 29.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी अपने बच्चों को कभी नहीं पढ़ाती हैं। 16.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी भाापिंग करती हैं। 14.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी सप्ताह में एक बार भाापिंग करती हैं। 70.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी कभी–कभी भाापिंग करती हैं। ऐसी एक भी महिला पुलिस कर्मी नहीं है जो कभी भाापिंग न करती हो।

"महिला पुलिसकर्मियों के रागात्मक जीवन पर कार्योजन का प्रभाव"

महिला पुलिस कर्मियों के रागात्मक जीवन पर कार्योजन का क्या प्रभाव पड़ता है? उनके कार्योजन में आने पर प्रेम सम्बन्ध बढ़ता है, या नही? अधिकांश महिलाओं ने कहा है कि उनके कार्योजन में आने पर प्रेम सम्बन्ध घटता बढ़ता नही हैं। यह सामान्य है।

सारणी संख्या 6.5

महिला पुलिस कर्मियों के रागात्मक जीवन पर कार्योजन का प्रभाव

प्रेम सम्बन्ध	आवृत्ति	प्रति□ ात
बढ़े हैं ––	30	10.00
स्मान हैं ––	115	38.33
घटे हैं ––	75	25.00
अन्तर नहीं	80	26.66

योग	**300**	**100.00**

उपरोक्त आंकड़ों के विश्लेशण से यह ज्ञात होता है कि महिला पुलिस कर्मियों के कार्योजन में आने से 10.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों के प्रेम–सम्बन्ध बढ़े हैं। उनका कहना है कि कार्योजन में आने से उनके पति व बच्चों को कोई आपत्ति नहीं है। 38.33 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों के प्रेम सम्बन्ध समान हैं। 25.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों के प्रेम सम्बन्ध में कमी आयी है। अर्थात् उनके जीवन में रोजाना लड़ाई–झगड़ा हुआ करता है। तथा 26.66 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों के पास उत्तर नहीं है क्योकि ये अभी अविवाहित हैं।

महिला पुलिस कर्मियों का पारिवारिक समायोजन (प्रमाप के आधार)

महिला पुलिस कर्मियों के पारिवारिक समायोजन को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है। उच्च, मध्यम और निम्न। महिला पुलिस कर्मियों के कार्योजन में आने से उनके पारिवारिक जीवन में कुसामंजस्यता आयी है। अर्थात् उनके पारिवारिक सम्बन्ध भिन्न श्रेणी के हो गये हैं।

सारणी संख्या 6.6

महिला पुलिस कर्मियों का पारिवारिक समायोजन

परिवारिक समायोजन की श्रेणी	आवृत्ति	प्रतिशत
उच्च	30	10.00
मध्यम	120	40.00

निम्न	150	50.00
योग	**300**	**100.00**

उपरोक्त आंकड़ों के अवलोकन से स्पश्ट है कि 10.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों का पारिवारिक समायोजन का स्तर उच्च श्रेणी का है। 40.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों का पारिवारिक समायोजन मध्यम श्रेणी का हैं। तथा 50.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों का पारिवारिक समायोजन निम्न श्रेणी का है।

महिला पुलिस कर्मियों को पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्योजन में कठिनाई :–

इस अध्ययन के अन्तर्गत महिला पुलिस कर्मियों को पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्योजन में होने वाले कठिनाइयों के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी है। अधिकांश महिला पुलिस कर्मियों ने कहा कि उन्हे पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्योजन में कोई कठिनाई नहीं होती है।

सारणी संख्या 6.7

महिला पुलिस कर्मियों की पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्योजन में कठिनाई

कार्योजन में कठिनाई	आवृत्ति	प्रतिशत
उच्च अधिकारी प्रसन्न नहीं रहते हैं।	30	10.00
मनसिक तनाव रहता है	66	33.00

कोई कठिनाई नहीं है।	204	68.00
योग	**300**	**100.00**

उपरोक्त आंकड़ों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 10.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी पारिवारिक जिममेदारियों के कारण अपने सेवायोजकों को प्रसन्न नहीं कर पाती हैं। 22.00 प्रतिशत महिला पुलिस पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्यस्थल पर मानसिक तनाव से ग्रसित रहती हैं तथा 68.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों को पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण अपने कार्योजन में कोई कठिनाई नहीं होती है। इस प्रकार स्पश्ट है कि अधिकांश महिला पुलिस कर्मियों में पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्योजन में कोई कठिनाई नहीं होती है।

महिला पुलिस कर्मियों को कार्योजन के कारण घर में कठिनाई

प्रस्तुत अध्ययन में महिला पुलिस कर्मियों को कार्योजन के कारण जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उनके बारे में जानकारी प्राप्त की गयी है। अधिकांश महिला पुलिस को कार्योजन के कारण घर में कोई कठिनाई नहीं हो पाती है।

सारणी संख्या 6.8

महिला पुलिस कर्मियों को कार्योजन के कारण घर में कठिनाई

घर में कठिनाई	आवृत्ति	प्रतिशत
घर में सुव्यवस्था ठीक से नहीं हो पाती	45	15.00
घरेलू कार्यो के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता	90	33.00
बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाती	30	10.00
कार्य बोध का अनुभव	36	12.00

कोई कठिनाई नहीं	99	33.00
योग	**300**	**100.00**

आंकड़ों के अवलोकन से स्पश्ट होता है कि 15.00 प्रतिशत महिला पुलिस कार्योजन के कारण घर की व्यवस्था ठीक प्रकार से नहीं कर पाती। 30.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों को घरेलू कार्यो के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता है। 10.00 प्रतिशत महिला पुलिस बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाती हैं। 12.00 प्रतिशत महिला पुलिस कार्यबोध का अनुभव करती हैं तथा 33.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों को कार्योजन के कारण घर में किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है।

महिला पुलिस कर्मियों को कठिनाई, यदि वे पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्योजन की भूमिका ठीक ढंग से नहीं निभा पाती हैं–

महिला पुलिस कर्मी पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्योजन की भूमिका ठीक प्रकार से नहीं निभा पाती हैं। कार्योजन की भूमिका ठीक प्रकार से न निभा पाने के कारण उन्हें जिन कठिनाइयों को सामना करना पड़ता है, उनकी जानकारी इस अध्ययन में प्राप्त की गयी है।

सारणी संख्या 6.9

महिला पुलिस कर्मियों को कठिनाई, यदि वे पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्योजन की भूमिका ठीक ढंग से नहीं निभा पाती हैं

कार्य स्थल की कठिनाईयाँ	आवृत्ति	प्रतिशत
उच्च अधिकारी द्वारा प्रताणिक की जाती हैं।	18	06.00
स्पश्टीकरण मांगा जाता हैं।	09	03.00

सन्तोश का अनुभव नहीं कर पाती	03	01.00
ऐसी स्थिति ही नही आती है।	30	10.00
कार्योजन से त्याग पत्र दे देंगी।	06	02.00
कोई कठिनाई नहीं	234	78.00
योग	**300**	**100.00**

उपरोक्त आंकड़ों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 6.00 प्रतिशत महिला पुलिस यदि पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण अपने कार्योजन की भूमिका ठीक ढंग से नहीं निभा पाती हैं तो उन्हे उच्च अधिकारियों द्वारा प्रताड़ित किया जाता है। 3.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों से स्पश्टीकरण मांगा जाता है। 1.00 प्रतिशत महिला पुलिस सन्तोश का अनुभव नहीं करती हैं। 10.00 प्रतिशत महिला पुलिस ऐसी स्थिति में नहीं आती हैं। 2.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों को कहना है कि वे कार्योजन से त्याग पत्र दे देंगी तथा 78.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों को कोई कठिनाई नहीं है।

स्पश्ट है कि अधिकांश महिला पुलिस कर्मियों को कार्य की भूमिका ठीक से न निभा पाने पर किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है।

महिला पुलिस कर्मियों की कठिनाई यदि वे कार्योजन के कारण घर की भूमिका ठीक ढंग से नही निभा पाती हैं–

महिला पुलिस कर्मी कार्योजन के कारण घर की भूमिका ठीक ढंग

से नही निभा पाती हैं तो उन्हें जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उसकी जानकारी इस अध्ययन में प्राप्त की गयी है। अधिकांश महिला पुलिस कर्मियो का कहना है कि उन्हे किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है।

सारणी संख्या 6.10

महिला पुलिस कर्मियों को कठिनाई, यदि वे कार्योजन के कारण घर की भूमिका ठीक ढंग से नहीं निभा पाती हैं।

घर की कठिनाईयां	आवृत्ति	प्रतिशत
परिवार वाले अप्रसन्न रहते हैं	102	34.00
नौकरी छोड़ने के लिए कहा जाता है	30	10.00
असन्तोश का अनुभव	24	08.00
मानसिक चिन्ता एवं तनाव	84	28.00
किसी तरह काम चलता है।	60	20.00
योग	**300**	**100.00**

आंकड़ों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 34.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों को कार्योजन के कारण यदि अपनी पारिवारिक भूमिका ठीक से नही निभा पाती हैं तो उनके परिवार वाले अप्रसन्न रहते है। 10.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों को कार्योजन छोड़ने के लिए कहा

जाता है। 08 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों को असन्तोश का अनुभव होता है। 28.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों को मानसिक चिन्ता एवं तनाव का अनुभव होता है तथा 20.00 प्रतिशत महिला पुलिस ने कहा कि चाहे कोई भी कठिनाई क्यों न आ जाये उन्हे किसी तरह काम चलाना है।

महिला पुलिस कर्मियों के पति एवं बच्चों को कठिनाई, यदि वे रात्रिकालीन ड्यूटी करती हैं–

महिला पुलिस कर्मियों को जब रात्रीकालीन ड्यूटी करनी होती है तो उनके पति एवं बच्चों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसी की जानकरी इस अध्ययन में प्राप्त की गयी है।

सारणी संख्या 6.11

महिला पुलिस कर्मियों के पति एवं बच्चों को कठिनाई, यदि वे रात्रिकालीन ड्यूटी करती हैं–

पति एवं बच्चों की कठिनाई	आवृत्ति	प्रतिशत
पति को बच्चों को देखना पड़ता है	22	07.33
बच्चे माँ की अनुपस्थिति का अनुभव करते हैं।	153	51.00
दैनिक जीवन में गड़बड़ी	33	11.00
कोई कठिनाई नहीं	92	30.66
योग	**300**	**100.00**

आंकड़ों के अवलोकन से स्पश्ट होता है कि 07.33 प्रतिशत महिला पुलिस जब रात्रिकालीन ड्यूटी करती हैं तो उनके पतियों को बच्चों को

देखना पड़ता है। 51.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों के बच्चे मां की अनुपस्थिति का अनुभव करते हैं। 11.00 प्रतिशत महिला पुलिस ने कहा कि जब इनको रात की पारी में काम करना पड़ता है तो उनका तथा उनके परिवार के दैनिक जीवन में गड़बड़ी आ जाती है। 30.66 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों को रात्रिकालीन ड्यूटी से कोई कठिनाई नहीं होती है।

निश्कर्श :–

वर्तमान अध्ययन में तथ्यों के आधार पर महिला पुलिस कर्मी अपनी भूमिका से किस प्रकार समायोजित है? का विश्लेशण किया गया है। अधिकांश महिला पुलिस कर्मी अपने तथा अपने पति की सामाजिक–आर्थिक स्टेटस से सन्तुश्ट हैं तथा वे महिला पुलिस कर्मी असन्तुश्ट हैं जिनके पति कम आमदनी की नौकरी करते हैं। अधिकांश महिला पुलिस कर्मियों का परिवार एकाकी है। पर यदि सास–ससुर साथ–साथ है तो उनसे उनका सम्बन्ध अच्छा है तथा वे अपने सास–ससुर से सन्तुश्ट है। वे महिलाओं की अनुपस्थिति में उनके बच्चों की देखभाल भी करते हैं। वे कभी इस बात पर बल नहीं देते हैं कि बहू को कार्योजन छोड़ देना चाहिए।

वैवाहिक समायोजन के प्रमाण से पता चलता है कि अधिकांश महिला पुलिस अपने वैवाहिक जीवन में पूर्णतः समायोजित हैं। बहुत कम ही महिला पुलिस ऐसी है जो अपने वैवाहिक जीवन में समायोजित नहीं हैं। वैयक्तिक इतिहास द्वारा भी सन्तोश और असन्तोश पर प्रकाश पड़ता है। महिला पुलिस कर्मी इस बात का अनुभव नहीं करती है कि कार्योजन से उनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में बाधा उत्पन्न होती है। बल्कि

वे इस बात का अनुभव करती है कि वे अब इस स्थिति में हैं कि परिवार की आव यकताओं की पूर्ति कर सकती हैं। अधिकांश महिला पुलिस चाहती हैं कि पति और पत्नी को जहां तक सम्भव हो एक ही स्थान पर कार्योजन करनी चाहिए। मनोरंजन एवं हॉबी की दृश्टि से महिला पुलिस कर्मी अधिकतर फिल्में देखती हैं, संगीत सुनती हैं, पत्र–पत्रिकाएं पढती हैं, कुछ महिला पुलिस सांस्कृतिक कार्य में रूचि लेती हैं। अधिकांश महिला पुलिसकर्मी प्रतिदिन खाना बनाने, कपड़ा धोने का कार्य करती हैं, कुछ महिला पुलिस कर्मी कभी–कभी भाापिंग भी करती हैं।

कार्योजन का प्रभाव महिला पुलिस कर्मियों के रागात्मक जीवन पर अच्छा पड़ा है। बहुत कम महिला पुलिस कर्मियों के रागात्मक जीवन पर कार्योजन का अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा है।

पारिवारिक समायोजन को प्रमाप के आधार पर मापा गया है। इसमें 10.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों का पारिवारिक समायोजन का स्तर उच्च श्रेणी का है। 40.00 प्रतिशत महिला पुलिस का पारिवारिक समायोजन मध्यम श्रेणी का है। तथा 50.00 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों का पारिवारिक समायोजन निम्न श्रेणी का है। जैसे–जैसे आयु बढ़ती है, वैसे–वैसे पारिवारिक समायोजन में स्थिरिता आती है। जिन महिला पुलिस कर्मियों का सामजिक–आर्थिक स्तर प्रथम श्रेणी का है उनका पारिवारिक समायोजन भी अच्छा है।

परन्तु जैसे–जैसे समाजिक आर्थिक स्तर कम होता जाता है, वैसे–वैसे पारिवारिक समायोजन या तो मध्यम या निम्न श्रेणी का होता है। निम्न पारिवारिक स्तर रखने वाली महिला पुलिस कर्मियों का समाजिक

आर्थिक स्तर भी कम है।

महिला पुलिस कर्मियों की पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्योजन में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है जैसे महिला पुलिस कर्मी अपने उच्च अधिकारियों को प्रसन्न नहीं कर पाती हैं। कुछ महिला पुलिस कर्मियों का कहना है कि वे पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्य स्थल पर मानसिक तनाव का अनुभव करती हैं। इसी प्रकार कभी–कभी कार्योजन के कारण महिला पुलिसकर्मियों को अपने घर में भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं। उन्हे घर के कामों के लिए कम समय मिलता है तथा वे बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाती हैं। कुछ महिला पुलिस कर्मी कार्यबोध का अनुभव करती हैं परन्तु अधिकांश महिलाये ऐसी हैं जिन्हे कार्योजन के कारण घर में कोई कठिनाई नहीं होती है।

ऐसी भी देखा गया है कि पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कभी–कभी महिला पुलिस कर्मी अपनी कार्योजन की भूमिका उचित रीति से निभाने में असमर्थ हो जाती हैं। अधिकांश महिला पुलिस कर्मियों ने कहा कि यदि वे पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्योजन की भूमिका निभाने में असमर्थ हो जाती हैं तो उन्हे कोई कठिनाई नहीं होती है। कुछ महिला पुलिस कर्मियों ने कहा कि ऐसी अवस्था में परिवार वाले अप्रसन्न रहते है। कुछ महिला पुलिस कर्मियों ने कहा कि उनसे कार्योजन छोड़ने को कहा जाता है। उन महिला पुलिस कर्मियों के पति एवं बच्चे जिन्हे रात की पारी में कार्य करना होता है उन्हें कठिनाई का सामना करना पड़ता है। कुछ महिला पुलिस कर्मियों ने कहा कि जब वे रात की पारी में कार्य करती है तो उनके पति को बच्चों को देखना पड़ता है। अतः कुल

मिलाकर यह कहा जा सकता है कि महिला पुलिस अपनी शिकायतों से ज्यादातर समायोजित है अथवा समायोजन में प्रयासरत हैं।

✵✵✵✵✵

सन्दर्भ सूची (REFERENCES)

1. Bell, W. Norman and vogal, Eyra, A Modern Introduction to the family, Mc Millan LImited, New York, 1960
   also, Foote, Nelson, New role af Men and women Marriage and family living, 234, 1961, pp 325-329.
2. R.S. why, Indian Men can't Accept working woman Eve's weekly, 5th May, 1973, P.25 also, Becker, Family Mariage and Parenthood, D.C. Health and company, Beston, 1948.
3. Pandey, Kanti, Distressing condition of Femal Farm worker, Economic Times, 11th May, 1975.
4. Nye, Ivan, F. Employment status of Mothers and Martial conflict, permanence and Happiness, social problem, vol le, 1958-59
5. Blood, Jr Robert, Q, The Husband wife Relatiionship, The employed Mother in america, Mye and Haffman (ed.) chocago, Rand, Mc Nally and company, 1963.
6. Mead, Margared, Beyond the Household the American

Review, vol.xv, No. 2, 9th January, 1971.

7. Carmack Margaret, The Hindu woman, Asia Publishing House, Bombay, 1961
8. Popence, Paul, The conservation of the family, Baltimore, Md., The williams and wilkine company, 1929.
9. Rani, Kala, Role conflice in working women, chetan Publication, New Delhi, 1976, P. 104 also, Pathak, Savita, Karyojit Mahilayo Karya Avam Parivar ka samaj, vagyanic adhyan, B.H.U. Varanasi, 1979, p.209.
10. Ogburn, williams, F. and tibbitta, clark, The family and its Functions, Recent Social Trends, New York, Mc Graw Hill Book company, 1933.
11. Woodhouse, C.G. a study of 250 successful Families, social Forces, vol. 8, No. 4 June, 1930 PP. 511-532.
12. Rani Kala, op cit, p.117.
13. Turnal, Ralph, H. some Aspect of women's Ambition, American Journal of sociology, vol. Ixx No. V. 1964.
14. Rani, Kala, op cit., p. 104.
15. Christensen, H.T. Marriage Analysis, Foundation for successful family life, Renald Press and co., Newyork, 1950.
16. Mandelbaum, David. G. The family in India, The family, it's Functions and destiny, ed. Ruth Anshen, New york, Harker and Brothers. Publishers, 1949.

17. Winch, R.F., The Mordern family, New York, Henry, Holt and company, 1952.

✵✵✵✵✵